Krishi Kumbh
Online E-Magazine
Www.KrishiKumbh.Com

कृषि कुंभ

E-ISSN: 2582-9769

कृषि कुंभ
हिंदी मासिक पत्रिका

खण्ड 05 भाग 08, (जनवरी, 2026)
पृष्ठ संख्या 11–13

मंजूषा चित्रकला पुनरुत्थान की राह पर

रंजना कुमारी, संगीता देव एवं प्रीति कुमारी
सामुदायिक विज्ञान महाविद्यालय
डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय,
पूसा, समस्तीपुर (बिहार), भारत।

Email Id: – kumariranjanaaicrp@gmail.com

परिचय

भारत में विभिन्न प्रकार की लोक चित्रकलाओं की विरासत है जो प्रत्येक क्षेत्र की विशेषता है जैसे पट चित्रा, मधुबनी, वर्ली, सवारा, कलमकारी, मंदाना, आदि। ये चित्रकलाएँ स्थानीय संस्कृति और धार्मिक आस्था के प्रति आवेगों और भावनात्मक प्रतिक्रियाओं के प्राकृतिक रूपों की सहज अभिव्यक्ति हैं। मंजूषा चित्रकला को ष्अंगिका कलाष् के रूप में भी जाना जाता है। इसका उद्गम बिहुल–बिषहरी या मंशा लोक कला है जो अंग प्रदेश (भागलपुर) में प्रचलित है। यह भागलपुर क्षेत्र की एक प्राचीन कला है। इस चित्रकला को विभिन्न माध्यमों से प्रभावित होने से बचाने के लिए तत्काल पुनर्जीवित करने की आवश्यकता है। मंजूषाएं आठ खंभों वाले एक आकार के बक्से हैं जो अम्बू, रस, पुआल और कागज से बने होते हैं। इन पर देवताओं और विचित्राओं के अलावा अन्य पात्रों के रेखाचित्र बनाए जाते हैं, जो शबिषहरी पूजाश से जुड़ी पूरी पौराणिक कथाओं का विशद वर्णन करते हैं। यह अंग क्षेत्र की लोककथाओं, कविताओं और संस्कृति का भी सचित्र प्रतिबिंब है।

मंजूषा को उनके रूप और अमूर्त विषय–वस्तु के कारण कई लोग आधुनिक कला मानते हैं। सबसे पहले डब्लू. जी. आर्चर और 1सीएस ऑफिसर ने 1931 से 1948 के बीच झारखंड के अलग–अलग हिस्सों में काम किया और इस कला की खोज की। आर्चर ने प्रसिद्ध मधुबनी चित्रकारी की भी खोज की। आर्चर ने इस पेंटिंग की तुलना पिकासो और जैक्सन पोलक की पेंटिंग से की। उन्होंने पाया कि अंगा में माली जाति (माली) अंजुशा पेंटिंग बनाती थी। ये पेंटिंग्स बिषहरी पूजा के अवसर पर बनाई गई हैं, जो आमतौर पर अगस्त में नाग देवताओं को प्रसन्न करने के लिए मनाई जाती है। चूंकि बिहुला की नाव को श्लहसन माली नामक एक व्यक्ति ने सजाया था, इसलिए उनकी कला माली जाति तक ही सीमित रही है। आर्चर ने इनमें से कुछ पेंटिंग्स को आर्चर संग्रह के हिस्से के रूप में लंदन के इंडिया ऑफिस लाइब्रेरी में भेज दिया। बिहुला–बिषहरी की पौराणिक कहानी के विभिन्न पहलुओं को चित्रित करने वाली यह कला राज्य के इन हिस्सों में पाल वंश के समय से प्रचलित है।

मंजूषा पेंटिंग के पीछे की कहानी

मंजूषा पेंटिंग के पीछे रहस्य आज का भागलपुर कभी नागा प्रदेश का हृदय स्थल था और चंपा नगर इसकी राजधानी थी। इतिहासकारों के अनुसार अंग जनपद की स्थापना वैदिक काल में राजा बलि के सबसे बड़े पुत्र अंग ने की थी। पौराणिक कथाओं के अनुसार मैना, भवानी, देवी, पद्मा भगवान और जया–पांच बहनें शिव की मानस पुत्रियां थीं। इन्हें बिषहरी भी कहा जाता था। एक बार उन्होंने भगवान शिव को बताया कि उनकी पृथ्वी पर पूजा की जाती है। भगवान ने उनकी तीव्र इच्छा पर विचार किया और एक शर्त रखी, ष्यदि मेरे भक्त, चंदो आप सभी की

पूजा करने के लिए तैयार हो जाएं तो यह ठीक हैमेरे लिएष। चांदो एक व्यापारी था और भागलपुर शहर के पश्चिमी बाहरी इलाके में चंपानगर में रहता था, उसने उनकी इच्छाओं का पालन करने से इनकार कर दिया। इससे पांच मानस पुत्रियां क्रोधित हो गईं और उन्होंने चांदो के सभी छह बेटों को मार डाला और उसके जहाज को भी डुबो दिया। हालांकि, भाग्य ने कुछ और ही सोच रखा था क्योंकि चांदो की पत्नी सोनिका ने सातवें बेटे बाला लखेंदर को जन्म दियारू इस बीच उज्जैन के एक व्यापारी बाउ को एक बेटी बिहुला का आशीर्वाद मिला। समय बीतने के साथ, बाला और बिहुला दोनों बड़े हुए और उन्होंने शादी कर ली। हालांकि, तब तक उग्र बहनों का गुस्सा कम नहीं हुआ था और उन्होंने बाला को उसकी शादी की रात ही मार डालने की धमकी दी थी। घर में उनके प्रवेश को रोकने के लिए, चांदो ने जोड़े के लिए लोहे और बांस से बना एक छोटा सा आवास तैयार किया। लेकिन, अभी भी गुस्साए बिषहरी बहनों ने किसी तरह एक नाग को अपने नए बने घर में घुसा दिया जिसने बाला को डस लिया और उसकी तत्काल मृत्यु हो गई। तब बिहुला ने एक मंजूषा के आकार की नाव तैयार की और इंद्रलोक चली गई। वहां उसने देवताओं से अपने पति के जीवन की प्रार्थना की और नृत्य करके देवताओं को प्रसन्न किया। देवता उसके पति के प्रति उसकी चिंता से प्रसन्न हुए और इस प्रकार बाला को उसका जीवन वापस मिल गया। इंद्रलोक से लौटने पर बिहुला ने चांदो को बिषहरी की पूजा करने के लिए राजी किया। और तब से बिषहरी पूजा मनाई जाती है।

पेंटिंग की खास बातें मंजूषा कला कहानी है

मंजूषा कला मृत्यु के अंधकार से जीवन के प्रकाश की ओर जाने की कहानी है। यह महिलाओं की परम शक्ति और सामर्थ्य को दर्शाती है। इस शैली की चित्रकला में मनुष्य को अंग्रेजी अक्षर "X" के रूप में दर्शाया जाता है, जिसके अंग रेखीय और एकसमान मोटी रेखाओं से खींचे जाते हैं। अन्य विशेषताओं में बिसहरिया को सांपों के साथ चित्रित करना शामिल है। चित्रकला में मुख्य पात्रों को बड़ी आंखों के साथ बिना कान के दिखाया गया है। बॉर्डर को मोटी और लहरदार रेखाओं से खींचा गया है। पुरुष पात्रों को मूंछों और सिर पर शिखा के साथ चित्रित किया गया है। पुरुष पात्रों की गर्दन महिला पात्रों की तुलना में चौड़ी है।

रंग और वर्णन

मंजूषा चित्रकला की महान कलाकार चक्रवर्ती देवी माली जाति से थीं। मंजूषा बनाने वाले कुल 20 लोगों में वे सबसे वरिष्ठ कलाकार थीं। चक्रवर्ती देवी अब नहीं रहीं। उनके अनुसार इस पेंटिंग में मुख्य रूप से तीन रंगों लाल, हरा और पीला का इस्तेमाल किया गया है। इस पेंटिंग के मुख्य पात्र हैं मनियार नाग, मंशा बिसहरीश, बिहुलाश, बाला लखिंदर, चांदो सौदागर, टुन्नी राक्षसी, सोनिका (चांदो की पत्नी)। इन पेंटिंग में अन्य रूपांकनों का भी प्रमुखता से उल्लेख किया गया है। प्रकृति से ली गई मंजूषाएँ, चाहे वह सूर्य हो, चंद्रमा हो, पक्षी हो, मछली हो, चंदन हो या बांस, घोड़ा हो या हाथी, लोकगीतों में हर किसी का अपना महत्व है। मधुबनी के विपरीत, मंजूषाएँ केवल तीन रंगों में चित्रित की जाती हैं – काले रंग की पृष्ठभूमि पर लाल, पीला और हरा। पेंटिंग के बॉर्डर डिजाइन पर बहुत जोर दिया जाता है जो शैली में बहुत ही विशिष्ट और प्रभावशाली होते हैं। रंगों को बिना किसी छायांकन के भरा जाता है और रेखाएँ मोटी खींची जाती हैं।

पेंटिंग को बढ़ावा देने के लिए एनजीओ और उद्योग/बैंकिंग क्षेत्र की भूमिका

मंजूषा चित्रकला को बढ़ावा देने के लिए गैर सरकारी संगठनों, बैंकिंग क्षेत्र और अन्य उद्योगों द्वारा की गई पहल के बाद ऐसा लगता है कि मंजूषा कला का खोया हुआ गौरव पुनः प्राप्त होने वाला है। भारतीय वाणिज्य एवं उद्योग

महासंघ ने नवोन्मेषी व्यावसायिक उद्यमों के माध्यम से इसकी वैश्विक पहुंच बढ़ाने के लिए संयुक्त राष्ट्र व्यापार एवं विकास सम्मेलन (यूएनसीटीएडी) के साथ एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए हैं और मंजूषा कला को लघु कुटीर उद्योग और हस्तशिल्प को बढ़ावा देने के लिए प्रमुख क्षेत्र के रूप में चुना है। अखिल भारतीय ललित कला एवं शिल्प समिति (एआईएफएसीएस) के प्रयास से स्थानीय कलाकार ज्योतिष चंद्र शर्मा की दो मंजूषा पेंटिंग्स को पहली बार मार्च, 2010 में एआईएफएसीएस द्वारा आयोजित राष्ट्रीय स्तर की कला प्रदर्शनी में प्रदर्शित किया गया। स्थानीय रेशम संस्थान में कला एवं डिजाइन के पूर्व व्याख्याता शर्मा को एआईएफएसीएस द्वारा देश के विभिन्न भागों से आए 65 अन्य कलाकारों के साथ सम्मानित किया गया। पूर्वी क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र (ईजेडसीसी) कोलकाता और राज्य सरकार के कला, संस्कृति एवं युवा मामले विभाग मनीषा पेंटिंग के प्रचार–प्रसार और प्रशिक्षुओं के कौशल विकास के लिए कार्यशालाओं को प्रायोजित कर रहे हैं। नाबार्ड ने भी मंजूषा पेंटिंग के व्यावसायिक उपयोग की दिशा में कुछ पहल की है और लगातार कार्यशालाओं का आयोजन किया है। पिछले कुछ वर्षों में सरकारी सहायता के अभाव और इस कला के व्यावसायिक उपयोग के सीमित प्रयासों के कारण इस कला का अभ्यास करने वाले पारंपरिक कलाकारों की संख्या में काफी कमी आई है। वर्तमान में मंजूषा चित्रकला में प्रशिक्षित कलाकारों की संख्या बीस से भी कम हैय चल रही कार्यशाला से कलाकारों की संख्या में वृद्धि होने की उम्मीद है। बिहार सरकार के कला संस्कृति एवं युवा मामले विभाग ने मंजूषा चित्रकला को यूनेस्को द्वारा संरक्षण हेतु कला रूपों की सूची में शामिल किया है।

मंजूषा चित्रकला का व्यावसायीकरण

पहली बार क्षेत्रीय कला को ग्रीटिंग कार्ड के कवर पर प्रदर्शित करके बढ़ावा देने का प्रयास किया गया है। यह अच्छी खबर हो सकती है कि डिजाइनर नववर्ष ग्रीटिंग कार्ड के कवर पर मंजूषा पेंटिंग को खरीदारों से जबरदस्त प्रतिक्रिया मिल रही है। राष्ट्रीय कृषि और ग्रामीण विकास बैंक (नाबार्ड) द्वारा ग्रीटिंग कार्ड बनाने के लिए प्रशिक्षित महिलाओं को इन कार्डों की आपूर्ति के लिए दिए गए ऑर्डर की मात्रा वास्तव में काफी उत्साहजनक है। कुछ स्थानीय सामाजिक और स्वैच्छिक संगठन और रोटा क्लब जो इस लुप्त होती क्षेत्रीय कला के पुनरु द्धार के लिए विभिन्न स्तरों पर अपना सहयोग दे रहे हैं, उन्होंने भी ग्रीटिंग कार्ड की आपूर्ति के लिए ऑर्डर दिए हैं। जिला विकास प्रबंधक नाबार ने बताया कि ब्रिटेन में एक होटल समूह के साथ काम करने वाले एक इरिडियन को मंजूषा पेंटिंग बहुत पसंद आई। वह मंजूषा ग्रीटिंग कार के नमूने अपने साथ ब्रिटेन ले गए, ताकि इस लोक कला के पुनरुद्धार के प्रयासों को बढ़ावा देने के लिए गठजोड़ की संभावना तलाशी जा सके। स्थानीय कालीन बुनकरों द्वारा मंजूषा पेंटिंग पर आधारित कालीन डिजाइन करने के पहले सफल प्रयास से इसके व्यावसायिक उपयोग की उम्मीद जगी है। भागलपुर जिले के सरलौला प्रखंड के भूरी गांव में पहली बार इस कला का उपयोग करके निर्मित कालीन को नाबार्ड द्वारा आयोजित श्ग्रामीण उद्यान मेलेश में प्रदर्शित किया गया था और इसे आगंतुकों से जबरदस्त प्रतिक्रिया मिली थी। नाबार्ड ने कौशल उन्नयन, डिजाइन विकास और करघा बुनाई के अपने कार्यक्रम के तहत मंजूषा चित्रकला का उपयोग कर कालीन उत्पादन को बढ़ावा देने के लिए स्थानीय स्तर पर एक परियोजना शुरू की है। वस्त्र और परिधान डिजाइनिंग विभाग, आर एयू, पूसा में परिधान हस्ताक्षर के माध्यम से मंजूषा चित्रकला को पुनर्जीवित करने के लिए एक परियोजना शुरू की गई है, जिसे उपभोक्ता से बड़ी प्रतिक्रिया मिल सकती है क्योंकि उपभोक्ता हमेशा परिवर्तन को स्वीकार करता है, इसका उपयोग ग्रामीण कारीगरों के लिए आजीविका सुरक्षित करने में मदद करेगा।